हंसराज रहबर

नेहरू बेनकाब

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नेहरू बेनकाब

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

क्रांतिकारी लेखक **श्री हंसराज रहबर**
की अन्य ऐतिहासिक एवं विचारोत्तेजक पुस्तकें :

- **गांधी बेनकाब**
- **तिलक से आज तक**
- **योद्धा संन्यासी विवेकानन्द**
- **भगतसिंह : एक ज्वलन्त इतिहास**
- **गालिब : हकीकत के आईने में**

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नेहरू बेनकाब

हंसराज रहबर

प्रस्तुतकर्ता
भगतसिंह विचार मंच

वितरक :
साक्षी प्रकाशन
दिल्ली-110032

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

© श्रीमती कौशल्या रहबर

प्रथम संस्करण : 1969
सातवीं आवृत्ति : 2005

प्रस्तुतकर्ता : भगतसिंह विचार मंच
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

वितरक : **साक्षी प्रकाशन**
एस-16, नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032
फोन : 22324833

मूल्य : **60.00**

अक्षर संयोजक : शब्दांकन लेजर प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

NEHRU : BENAKAB *by* Hans Raj Rahabar Rs. 60 .00

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अपनी बात

इतिहास विज्ञान है। विज्ञान सत्य है। सत्य पर तथ्यों के सहारे पहुंचा जा सकता है।

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए कड़वी दवा का सेवन और मानसिक स्वास्थ्य के लिए कड़वे सत्य का सेवन आवश्यक है।

जवाहरलाल नेहरू और गांधी हमारे राष्ट्रीय संघर्ष के प्रमुख नेता थे। उनके जीवन के अध्ययन का मतलब है, राष्ट्रीय संघर्ष के इतिहास का अध्ययन। व्यक्ति आते हैं, जाते हैं, पर राष्ट्र अपनी जगह बना रहता है। उसका जीवन एक सतत बहती नदी के समान है, समय का एक अटूट क्रम है। इसलिए इतिहास की कोई प्रक्रिया अपने ही युग में समाप्त नहीं हो जाती, वह अपने बाद के इतिहास की घटनाओं और प्रक्रियाओं को प्रभावित करती रहती है। यह प्रभाव अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी। दरअसल अच्छे-बुरे का निर्णय वर्ग-दृष्टिकोण से होता है। जिस या जिन वर्गों के हाथ में सत्ता होती है, वे अपने प्रचार के विशाल साधनों से बुरे प्रभाव को भी अच्छा कर दिखाते हैं और उसे अपने निहित स्वार्थों की रक्षा के लिए इस्तेमाल करते हैं।

हमारे राष्ट्रीय संघर्ष की प्रक्रिया भी 1947 में या गांधी और जवाहर की मौत के बाद समाप्त नहीं हो गई, वह आज भी हमारे चिंतन और कर्म को न सिर्फ राजनीति के क्षेत्र में बल्कि साहित्य, संस्कृति और समाज के हर क्षेत्र में प्रभावित कर रही है। गांधी और जवाहरलाल हमारे इस राष्ट्रीय संघर्ष के नायक और उपनायक थे, इसलिए उनका व्यक्तित्व इस प्रभाव को मूर्तरूप प्रदान करता है। इसीलिए उन पर बहुत कुछ लिखा जा रहा है और लिखा जाएगा।

और मैंने भी इसीलिए जवाहरलाल नेहरू के जीवन का यह अध्ययन प्रस्तुत करने की ज़रूरत महसूस की।

यह गांधी शताब्दी का वर्ष है और शताब्दी का उद्देश्य भी यही है कि गांधी ने राष्ट्रीय संघर्ष में जो भूमिका अदा की, उसे उजागर किया जाए। मेरा

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

यह अध्ययन भी इसी सिलसिले की एक कड़ी है। कड़ी इसलिए है कि जवाहरलाल और गांधी एक ही रूप में हैं और जवाहरलाल के चरित्र-विश्लेषण से भी गांधी को समझने में मदद मिलती है। जवाहरलाल हमारे राष्ट्रीय संघर्ष में वामपक्ष के नेता मशहूर रहे और उनका संबंध समाजवादी विचारधारा से जोड़ा जाता है, पर हकीकत यह है कि उन्होंने बातें चाहे कुछ भी कीं, उनका व्यवहार हमेशा गांधीवाद रहा।

15-08-1969
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

हंसराज रहबर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अनुक्रम

पुरखे	9
बचपन और शिक्षा	12
स्वदेश वापसी	17
नेता और जनता	25
असहयोग	36
गांधी और जवाहरलाल	38
कुछ-न-कुछ	46
राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता	53
दो घोड़ों का सवार	62
नमक सत्याग्रह	69
बाप-बेटा	75
नये जाल	85
त्रिपुरी	93
15 अगस्त	102
मौत के बाद	112
परिशिष्ट-1	
दार्शनिक विचार	119
इतिहास लेखक	131
परिशिष्ट-2	
नेहरू ने लिखा था : जय जवाहरलाल की!	147
वसीयतनामा	151
महात्मा गांधी का पत्र	153
सुभाषचन्द्र बोस का पत्र	155

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

यह अध्ययन ... ने की एक ... कि

अचानकस्मात ...

से भी ... हालात हमारे ...

में ... भारी विचारधा... से और

... भी की, उनका ...

पुरखे

जवाहरलाल नेहरू के बारे में यह बात अक्सर कही जाती है कि वह एक बड़े बाप के बेटे थे, इसलिए देश की राजनीति में बहुत जल्दी बहुत बड़े आदमी बन गये। इसमें शक नहीं कि मोतीलाल नेहरू के बड़ा आदमी होने से जवाहरलाल को भी बड़ा आदमी बनने में मदद मिली, लेकिन दूसरी बात जिसने उन्हें बड़ा आदमी बनाया इतिहास का रहस्य है, जिसे हम 'बाप-बेटा' परिच्छेद में उद्‌घाटित करेंगे।

उनके गुण और स्वभाव को समझने के लिए उनके कुल और कुटुम्ब को समझना भी जरूरी है क्योंकि कुल और कुटुम्ब से जो संस्कार विरासत में मिलते हैं, मनुष्य अगर विशेष परिस्थितियों और संघर्षों में पड़कर उन्हें झटक न दे तो इन्हीं संस्कारों के आधार पर उसका चरित्र-निर्माण होता है।

जवाहरलाल नेहरू वंश के नाते कश्मीरी पंडित थे। यह अपनी संस्कृत की विद्वता के कारण राज-दरबारों में आदर-सम्मान पाने वाला पुरोहित-वर्ग था, जिसे हम आजकल की परिभाषा में राजभक्त बुद्धिजीवी वर्ग भी कह सकते हैं। जब मुसलमानों का राज आया और फारसी दरबारी भाषा बनी तो इस वंश के लोगों ने चट फारसी पढ़ना शुरू कर दी। इसी कारण जवाहरलाल नेहरू के राजकौल नाम के एक पुरखे कोई ढाई सौ बरस पहले अठारहवीं सदी के शुरू में कश्मीर छोड़कर दिल्ली आ बसे। वह संस्कृत और फारसी के माने हुए विद्वान थे। ये मुगल साम्राज्य के पतन के दिन थे। औरंगजेब मर चुका था और फर्रुखसियर बादशाह था। एक बार जब वह कश्मीर गया तो उसकी नजर राजकौल पर पड़ी। उसी के कहने से 1716 के आस-पास कौल परिवार दिल्ली आया। बादशाह ने उन्हें एक बहुत बड़ी जागीर के अलावा, एक मकान भी दिया, जो ठीक नहर के किनारे स्थित था और इसी कारण उनका नाम 'नेहरू' पड़ा। धीरे-धीरे कौल झड़ गया और नेहरू शेष रह गया।

जैसे-जैसे मुगलों का वैभव घटा नेहरू परिवार की जागीर भी घटते-घटते खत्म-सी हो गई। जवाहरलाल के परदादा लक्ष्मीनारायण नेहरू ने हवा का रुख पहचाना और उन्होंने मुगलों के बजाय अंग्रेज की नौकरी कर ली। वह दिल्ली दरबार में कम्पनी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org